साठोत्तरी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर ज्ञानरंजन

शिखा उमराव ,
शोध छात्रा,
ज्वाला देवी विद्यामन्दिर,
पी0 जी0 कालेज,
कानपुर उ0प्र0

सारांश

हिन्दी कहानी में साठोत्तरी कहानी परिवर्तन का दूसरा महत्वपूर्ण चरण है। जो 1961 से 1962 ई0 के बीच माना जा सकता हैं। वस्तुतः यह वह समय था जब साठोत्तरी कहानी में विभिन्न आन्दोलन के रूप में खुद को नयी कहानी की रूढ़ियों से मुक्त कर अपने बदलाव का परिचय दिया। नयी कहानी के बाद सन् 1960 के बाद की नए यथार्थ धरातल की कहानी को साठोत्तरी कहानी कह सकते हैं।

कहानी कहने या सुनने की कला वस्तुतः आज की न होकर बहुत प्रचीन कला हैं। जब से मानव में सोचने या समझने की प्रवृति आई तब से कहानी का विकास माना जा सकता है। गत बीस वर्षो में कहानी की परम्पराओं में बहुत अधिक परिवर्तन होते देखा गया हैं। नयी कहानी की दिशा में नयी कहानियां की भी सर्जना हुई हैं। किन्तु आप की कहानी इन सब से बहुत आगे बढ़कर अपने को कथा साहित्य में प्रतिष्ठित कर चुकने में सफलता अर्जित कर लिया हैं। साठोत्तरी कहानियां शिल्प और कथ्य की दृष्टि से खुद को महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। यह कहानी, कहानी के विधान को ताक पर रखकर अनुभूति, चिन्तन तथा संवेदना की तन्यमयता और प्रमाणिकता को कहानी का रूप देने के लिये अग्रसर है। शिल्प की दृष्टि से भी इन कहानियों में बड़ा अन्तर देखने को मिलता हैं। ठाकुर प्रसाद सिंह ने कहानी के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते है,'' हिन्दी के कथा साहित्य ने बड़ी तन्यमयता से अपना कार्य पूरा किया है उत्तरदायित्व का ज्ञान उसे अपेक्षाकृत और शैलियों से अधिक रहा हैं'' आज की हिन्दी कहानी साहित्य मनोविज्ञान, स़ंत्रास कुंठा की परिधि से बाहर निकल कर यथार्थ की भूमि पर स्वछंद रूप से विचरण कर रही हैं। आज का लेखन मनुष्य की यातनाओं का मूक और तटस्थ्य साक्षी नही रहा, अपितु उसका सहभोक्ता और सहयात्री भी हैं। इसलिये आज की कहानियां संदर्भ सापेक्ष है यह अनुभव तक सीमित न रहकर अनुभव के अर्थो तक पहुॅचती है जहां आदमी एक विराट ऐतिहासिक प्रांगन में मौजूद हैं।

साठोत्तरी हिन्दी साहित्य कहानी के अर्न्तगत सन् 1960 ई0 के बाद नवलेखन (नयी कहानी, नयी कविता आदि) युग से बहुत हद तक भिन्नता की प्रतीत कराने वाली ऐसी पीढ़ी के द्वारा रचित साहित्य है जिसमें विद्रोह एवं अराजकता कर स्वर प्रधान रूप से मुखरित है साठोत्तरी लेखन में विद्रोही चेतनायुक्त आन्दोलन प्राथमिक रूप से कहानी के क्षेत्र में मुखर हुई है। आजादी के बाद का सामाजिक परिवेश यदि नई कहानी की पार्श्वभूमि की रचना करता है, तो साठोत्तरी कहानी में भी नेहरू युग का स्वप्न भंग, परिवेश की विसंगति, की यात्रा और कलह जैसी कहानियों में इसके गुण दिखाई देते है।

साठोत्तरी कहानी के परिदृश्य मे ज्ञानरंजन का उदय हुआ। जिस समय उन्होंने लिखने की शुरूआत की, वह समय वस्तुतः नयी कहानी का था। उसका कुहासा छॅटने लगा था। परन्तु कोलाहल बरकरार था। ज्ञानरंजन की कहानियों की उन विशेषताओं पर बल देगें, जो उन्हें किसी स्तर पर नयी कहानी और उससे पहले की कहानी के साथ जोड़ती हैं। ज्ञानरंजन की कहानियों में एक स्पेस और समय का निर्माण करते हैं। उनकी कहानियों की होते है, उनके भीतर एक विचार जड़े जमाकर बैठा होता हैं। विचारों के साथ ज्ञानरंजन की कहानी का यह नजदीकी रिश्ता उन्हें नयी कहानी से भी पहले सक्रिय कथाकारों अजय यशपाल और जैनेद्र के साथ जोड़ा जा सकता हैं। ज्ञानरंजन की कथा शैली की परंम्परा से भिन्न प्रतीत होती है। वह कहानी के रूप में उतनी घटनाबद्ध और चरित्रबद्ध नहीं है, जितनी विचारबद्ध हैं। ज्ञानरंजन की नजर शहर के भीतर की उन कुरूपताओं पर ही अधिक पड़ती है जो समाज को कहीं न कहीं हानि पहुॅचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है जो 'घंटा' के कुन्दन सरकार और रेस्तरां की जिन्दगी में उभरती हैं। वे 'बर्हिगमन' के मनोहर और सोभदत्त के उस सोच और व्यवहार में साफ–साफ झांकती हैं। ज्ञानरंजन साठोत्तरी हिन्दी कहानी के सफल व सशक्त हस्ताक्षर है यह निर्विवाद रूप से सत्य है। उनकी कहानियां समाज में व्याप्त कुरूतियां, आशा–निराशा, कुण्डा सांत्राश, विघटन आदि का प्रयोग उनकी कहानियों में देखा जा सकता हैं। ज्ञानरंजन अक्सर पारिवारिक कथा–फलको का चुनाव करते है क्योंकि परिवार ही सामाजिक संबन्धों की प्राथमिक ईकाई हैं। इसके माध्यम से वह वे उन प्रभावों और विकृतियों को सामने लाते है जो बुर्जुआ संस्कारों की देन है। इन्हीं संस्कारोंवश प्रेम जैसा मनोभाव भी हमारे सामाज में या तो रहस्यमुलक है या भोगवाचक। ऐसी कहानियों में किशोर प्रेम सम्बन्धों से लेकर उनकी प्रौढ़ परिणति तक के चित्र उकेरते हुए ज्ञानरंजन अपने समय की समूची स्थिति पर टिप्पणी करते हैं। ज्ञानरंजन की कहानियां नयी यथार्थवादी दृष्टि को सामने लाने वाली कहानियां हैं। जीवन के प्रति ज्ञानरंजन की दृष्टि बड़ी ही तीखी और आलोचनात्मक प्रतीत होती हैं। ज्ञानरंजन अत्यन्त क्रूर होकर मानवीय सम्बन्धों की छानबीन करते दिखाई पड़ते है और व्यक्ति के भीतर छिपे सही चोर को पकड़ लेने में सक्षम होते हैं।

ज्ञानरंजन साठोत्तरी पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक हैं। साठोत्तरी पीढ़ी के 'चार यार' के रूप में प्रसिध्द मंडली के चारो सदस्य–ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, काशीनाथ सिंह, एवं रवीन्द्र कालिया में से सबसे पहले सर्वाधिक प्रसिद्ध ज्ञानरंजन को ही प्राप्ति हुई हैं। ज्ञानरंजन साठोत्तरी पीढ़ी के लेखक है और 'अकाहानी' में शामिल लेखको के मित्र भी है उनके सुप्रसिद्ध 'घंटा' कहानी की समीक्षा करते हुए कहानी के शीर्षक समीक्षक सुरेन्द्र चौधरी ने लिखा है कि कथा कहानियां के सदृश्य के बावजूद 'अकहानी' के संयोजन से' घंटा' का संयोजन अनिवार्य मित्र हैं। इस तरह से वह सातवे दशक में उभरकर आनेवाले हिन्दी कहानीकारों में ज्ञानरंजन जी का स्थान अग्रणी हैं। 'ज्ञानरंजन' की कहानियां मुनष्य के अनुभव की उस तक ले जाती हैं। और बड़ी निर्ममता से मानवी सम्बन्धों की आलोचनात्मक पड़ताल करती हैं। वे जीवन के सूक्ष्म निरीक्षण और अभिव्यक्ति की व्यापकता का अद्भुत परिचय तो कराती ही है। बल्कि हिन्दी कहानियों के आगे नए क्षितिज भी खोलती हैं। कथ्य शिल्प, भाषा को लेकर प्रत्येक प्रकार से ज्ञानरंजन जी बेहद शर्तक रहते हैं। सन् साठ के बाद हिन्दी कहानी एक महत्वपूर्ण प्रस्थान बिन्दु था। कहानी का दूसरा इतिहास मानी गयी और ज्ञानरंजन सामाजिक रूप से सबसे बड़े रचनाकार कहे गये। परन्तु प्रत्येक बड़े लेखक की तरह ज्ञानरंजन जी की कहानिया–अपने समय को लांघती गयी। 'सपना नही' इनकी कालजयी कहानियों का संग्रह

ही नही है वह हमारे समय का एक साहित्यिक दस्तावेज भी है और हमारे यथार्थ का साफ आइना भी है। ज्ञानरंजन की कहानियां मध्यमवर्ग के पारिवारिक सम्बन्धों, उसके युवा सदस्यों की अपनी कहानियों को खड़ा करने और उन्हें ऊँचाई देने के लिये वस्तु से अधिक छोटे–छोटे प्रान्तों, प्रकरणों और बिंबो की संरचानओं का सहारा लेते हैं। इनकी कहानी कला की विशेषतायें यह है कि कहानी में स्वयं कहानीकार की उपस्थिति होते हुए भी वह दिखाई नही देता है। उनकी कथा शैली परम्परा से भिन्न हैं।

मनुष्य वस्तुतः एक सामाजिक प्राणी हैं। उसका संपूर्ण जीवन समाज के दायरे में रहकर ही गुजरता है। अतः स्वाभाविक है कि समाज की आवश्यकता ही नही अपितु की हद तक कठिन हैं। वह जिस परिवेश में रहता है उसके जीवन पर उसका व्यापक प्रभाव पड़ता है एक कहानीकार सामाज में रहकर न सम्बन्धो की सूक्ष्म पड़ताल करते हुए अपनी कहानियों का कथानक प्राप्त घटनाओं में नाटकीय होकर भी संभाव्य और यर्थाथ प्रस्तुत करती है, उपयोगिता की दृष्टि से बिना सामाजिक जीवन की यथार्थ की झांकी अवलोकित नही की जा सकती परिवार की छोटी–छोटी हरकतों को भी उनकी कहानियो में नया अर्थ मिलता हैं। ज्ञानरंजन की कहानियों से समय –समय पर आधुनिक बांध और बदलते मानव मूल्य के नये आयाम की प्रस्तुति देखी जा सकती है। अतः इनकी कहानियों में सामाजिक तनाव की स्पष्ट झलक दिखाई देती हैं। साठोत्तरी कहानी और नई कहानी दोनों कथाकारों भीतरी स्तर पर एक–दूसरे के साथ जुड़े होने के बाद भी अलग–अलग हैं। देखा जाये तो दोनो का अलग–अलग अस्तित्व हैं। नयी कहानी के कथाकारों में परिवार के टूटने को कथ्य बनाया गया है ज्ञानरंजन की कहानियों 'शेष रहते हुए' सम्बन्ध 'पिता' 'फेंस के इधर और उधर' में टूटते परिवारों को कथ्य का एक अंश बनाया गया हैं। नई कहानी जिस तरह से अपनी कहानियों के कथ्य को भरसक यथार्थ से प्रेरित ही रहते हैं। मूल्यों का टूटने और विघटन नयी कहानी के प्रमुख गुणो मे से है नयी कहानी, समाज मे नये मूल्यों की तलाश भी करती थी साठोत्तरी कहानी मूल्यों के अस्वीकार की कहानी है वह नये मूल्यों की भी एक चिर परिचित उदासीनता के साथ देखती हैं। ज्ञानरंजन की 'घंटा' 'बर्हिगमन' संबंध हास्यरस और ज्ञानरंजन की कहानियों में काव्य–तत्वो का प्रचुरता से प्रयोग किया गया है किन्तु यह पारंपरिक नही है वह इन तत्वो का प्रयोग भी अपने रूखे अंदाज में करते दिखाई पड़ते हैं। अपनी एक किताब के संदर्भ में ज्ञानरंजन जी लिखते है, ''किसी वास्तविक कहानी की रचना के पीछे कभी कभी यह भी हुआ है कि एक कविता ने उनका निर्माण कर दिया। इनकी पहली कहानी मनहूस बंगला थी, यही कहानी बाद में बिल्कुल फिल्मी लगने लगती हैं। क्योंकि नयी कहानी को कई कहानीकारों से एकदम अलग कर देती हैं। नयी कहानी के कथाकारों के बीच जिस प्रकार से निर्मल वर्मा ने अपना अहम स्थान प्राप्त किया है ठीक उसी प्रकार ज्ञानरंजन ने साठोत्तरी हिन्दी कहानी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल हुए हैं। नामवर सिंह का मनना है कि ज्ञानरंजन में सामाजिक चेतना निर्मल वर्मा के मुकाबले कहीं ज्यादा हैं।

साठोत्तरी हिन्दी कथा साहित्य में ज्ञानरंजन की कहानियों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। इस संग्रह में प्रायः उनकी सभी बहुचर्चित कहानियां शामिल है जो समकालीन सामाजिक जीवन की अनेकानेक परिस्थितियों का खुलासा करती प्रतीत होती है, इस उद्देश्य तक पहुचने के लिये ज्ञानरंजन ने सर्वप्रथम पारिवारिक कथा फलक को ही अपनी कहानियों में स्थान दिया हैं। परिवार ही सामाजिक संम्बन्धों की प्रथम ईकाई हैं। साठोत्तरी कहानी की अपनी अलग अलग पहचान होने के बावजूद उसे नयी कहानी से सर्वथा अलग ही मानना चाहिए। वस्तुतः

स्वातंत्रयोत्तर युवा पीढ़ी साठोत्तरी कहानी के रचनाकार है इन कहानीकारों में देश की बिगड़ती हालात को देखकर आक्रोश उभरा हैं। उन्होंने नयी कहानी के रहे सहे आशावाद के भ्रम को झटक दिया। 1960 के आस–पास हिन्दी कहानी के विकास क्रम में एक नया आयाम शुरू होता है। इस कथ्यगत परिवर्तन की चेतना को राजेन्द्र यादव ने स्वीकारते हुए लिखा है कि ''कुछ वर्षो से नयी कहानी रचना का एक नया रूप उभर कर सामने आया है'' साठोत्तरी कहानी को डा0 गंगाप्रसाद विमल ने पहले समकालीन कहानी और उसके बाद उसको अकहानी की व्याख्या दी। आर्थिक दृष्टि से भी साठोत्तरी काल बहुत विषमताओ ंसे भरा हुआ था। गहरे आर्थिक संकट में झगड़ता देश जिन विषमताओं से घिरा हुआ था उससे भी अनेक प्रकार की कठिनाई सामने आती नजर आयी।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सन् 1960 साठोत्तरी में समाज में जो परिवर्तन हुए उन परिवर्तनों को लेकर साहित्यकारों ने अपनी रचना को आधार बनाया वस्तुतः यह वह समाज था जहां चारो ओर विषमातओं का ताना बाना हुआ था। ज्ञानरंजन की कहानियों में इन सभी विशेषताओं का समाधान देखा जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी कहानी के सौ वर्ष, प्रकाश मनु, बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य, सम्पादक डा0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली 2005, पृष्ठ 121
2. प्रतिनिधि कहानियां, ज्ञानरंजन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1984, का पृष्ठ 75
3. प्रतिनिध कहानियां, ज्ञानरंजन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1984 भूमिका से
4. समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि, धनंजय, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970, पृष्ठ 90
5. भीतर तक भोगे जीवन का कहानीकार, जीवन सिंह, पल – प्रतिपल, अंक 45,1998 पृष्ठ 74
6. सिंह, नामवर, कहानी यी कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद सं0 2012 पृष्ट 53
7. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं0 2009, पृष्ठ 112
8. आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम, वार्णा प्रकाश, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 109
9. याद और याद – सपनी नहीं ज्ञानरंजन, पृष्ठ 22
10. धनंजय, समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि, पृष्ठ – 172
11. डा0 महेन्द्र भटनागर, हिन्दी कथा साहित्य विविध आयाम, आत्माराम एण्ड सेस।
12. बीसवीं सदी के अन्त में हिन्दी कहानी : पृष्ठ – 197
13. हिन्दी कहानी : पहचान और परख, पृष्ठ – 75